बही खाता शुभारंभ विधि

आवश्यक सामग्री : अक्षत (चावल), कुंकुम, मोली, गुड़, जल-कलश, नारियल (गट), बड़ा कलश (नारियल रखने हेतु), सिक्के, बाजोट, लाल वस्त्र, स्वस्तिक बनाने हेतु चावल, थाली, मंगल भावना यंत्र आदि ।

*** प्रारंभिक भाग**

- नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण से प्रारंभ करें ।
- निम्न मंत्रोच्चार करते हुए थाली के मध्य कुंकुम से **अर्हम्** लिखें व बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चावल से **स्वस्तिक** 卐 बनायें -

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ।।

(अर्हम् व स्वस्तिक निर्माण के पश्चात् भी उपरोक्त मंत्रोच्चार हो सकते हैं ।)

- स्वयं के व परिवार के प्रमुख तथा उपस्थित सभी के निम्न मंत्रोच्चार के साथ मस्तक पर **तिलक** करें व कलाई पर **मोली** बांधें -

धम्मो मंगल मुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइ मणुत्तरं।।

धर्मस्य शरणं ग्राह्यं, सर्वदा सुखदं वरम् ।
धर्मस्त्राता पिता माता, भ्राता समृद्धिदायकः ।।

- कलम के मोली बांधें । कम्प्युटर आदि हो तो निम्न मंत्रोच्चार के साथ कुंकुम से अथवा स्टीकर से स्वस्तिक अंकित करें -

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य ।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ।।

*** मंगल भावना यंत्र की स्थापना**

सामूहिक मंगल भावनायें करते हुए बाजोट या अन्य समुचित स्थान पर **मंगल**

भावना यंत्र की स्थापना करें -

श्री सम्पन्नोऽहं स्याम्	ह्री सम्पन्नोऽहं स्याम्	धी सम्पन्नोऽहं स्याम्
धृति सम्पन्नोऽहं स्याम्	शक्ति सम्पन्नोऽहं स्याम्	शान्ति सम्पन्नोऽहं स्याम्
नंदि सम्पन्नोऽहं स्याम्	तेजः सम्पन्नोऽहं स्याम्	शुक्ल सम्पन्नोऽहं स्याम्

(मंगल भावना यंत्र उपलब्ध न हो तो केवल मंगलभावनाएँ करवाएँ ।)

*** मंत्रोच्चार व बही-खातों का शुभारंभ**

सभी सामूहिक निम्न मंत्रोच्चार करें -

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्व साधुभ्यो नमो नमः

- **लोगस्स** का पाठ करें -

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।
कुंथं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।।
कित्तिय-वंदिय-महए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

- बही-खातों के मुख्य पृष्ठों पर निम्नांकित शब्द-वंदना अंकित करें -

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

णमो अरहताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।
एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पाव पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

अ	ए	रि
स	आ	मं
उ	प	सा

ज्ञान	दर्शन
चारित्र	तप

अ	ए	रि	
स	आ	मं	
उ	प	सा	

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

श्री भगवान महावीर जैसा दिव्य ज्ञान, श्री गौतम गणधर जैसा भव्य ध्यान, श्री भरत चक्रवर्ती जैसी अनासक्ति, श्री बाहुबलि जैसी शक्ति, श्री अभयकुमार जैसी निर्मल बुद्धि, श्री धन्ना शालिभद्र जैसी ऋद्धि-सिद्धि, सेठ सुदर्शन जैसा शील, श्री कयवन्ना जैसा सौभाग्य, माता मरु देवी जैसी सुखश्री के लिए विक्रम संवत् ..... तिथि ..... वार ..... दिनांक ..... दिवस/रात्रि में ..... (समय) देव-गुरु-धर्म का पावन स्मरण करते हुए बही खातों का सानन्द शुभारम्भ किया ।

*** समापन**

- **परमेष्ठी वंदना** का सामूहिक संगान करें ।
  वन्दना आनन्द-पुलकित.... (देखें परिशिष्ट) ।
- **मंगलपाठ** के साथ संपन्न करें ।